अंगारकी चतुर्थी व्रत कथा PDF

पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि भारद्वाज और देवी पृथ्वी के पुत्र का नाम मंगल था। मंगल ने अपने पिता की अनुमति से मात्र सात वर्ष की आयु में ही भगवान गणेश की कठोर तपस्या शुरू कर दी थी। उस बालक ने भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिए वर्षों तक घोर तपस्या की, उपवास किया। उनकी भक्ति और भक्ति को देखकर भगवान गणेश प्रसन्न हुए और कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन मंगल पर प्रकट हुए।

भगवान गणेश पृथ्वी के पुत्र के सामने प्रकट हुए और उनसे वरदान मांगने को कहा। पृथ्वीपुत्र ने भगवान गणेश से हमेशा उनकी शरण में रहने और स्वर्ग में देवताओं के बराबर पद पाने की इच्छा व्यक्त की। तब भगवान गणेश ने उनकी मनोकामना पूरी होने का आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम्हें स्वर्ग में देवताओं जैसा सम्मान मिलेगा। आप मंगल और अंगारक नामों से विख्यात होंगे।

मंगलवार को आने वाली संकष्टी चतुर्थी आपके नाम अर्थात अंगारकी चतुर्थी से जानी जाएगी और इसका व्रत और पूजन करने से साधक को वर्ष की सभी संकष्टी चतुर्थी के व्रत का पुण्य लाभ प्राप्त होगा। इतना कहकर भगवान गणेश अंतर्ध्यान हो गए। संकष्टी चतुर्थी का यह व्रत अत्यंत दुर्लभ है और इसकी महिमा अपार है। इस व्रत को करने से व्यक्ति की मनोकामना पूरी होती है। भगवान गणेश की कृपा से उन्हें सुख-शांति, धन-समृद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

pdfinbox.com

pdfinbox.com

pdfinbox.com